AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

शिवानी के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना एवं संस्कृति

शिव किशोर राय, डॉ. राजेश कुमार शर्मा, डॉ. शिवानी शर्मा
हिंदी विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPERSUBMITTED BY MEFOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINEPAPER.IFANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHERWILL NOT BELEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MYCONTENT FROM THE JOURNALWEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANYTECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FORTHE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDENBY ME OR OTHERWISE, ISHALL BELEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHORATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सारांश

समकालीन कथा साहित्य के दौर में विशेषकर पाँचवें–छठे दशक के लेखक–लेखिकाओं में गौरा पंत 'शिवानी' का नाम अपनी बहुज्ञता, बहुश्रुतता आदि विशेषताओं के साथ तीव्रता से उभरा है। 17 अक्टूबर 1923 ई. को राजकोट (गुजरात) में अश्विनी कुमार पाण्डे के यहाँ जन्मी शिवानी का संबंध बाल्यकाल से ही साहित्यिक वातावरण से रहा है। अपनी आरम्भिक शिक्षा–दीक्षा गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के सान्निध्य में पूर्ण करने के पश्चात् शिवानी अपने पति श्री शुक्रदेव पंत के सहयोग से आजीवन लेखन में प्रवृत्त रही। मुख्य रूप से नारी जीवन को विविधरूपा संवेदना के साथ प्रस्तुत करने वाली शिवानी ने कुमाऊँ के सामाजिक जीवन को भी प्रमुखता प्रदान की है। साथ ही शहरी परिवेश का चित्रण भी शिवानी ने तत्कालीन सामाजिक एवं पारिवारिक विषमताओं के साथ अपनी कथाओं के माध्यम से मुखरित किया है।

मुख्यशब्द: शहरी, चित्रण, बहुज्ञता, बहुश्रुतता आदि

परिचय

लघु उपन्यास 'रतिविलाप' में हीरावती की शादी बचपन में ही एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से कर दी जाती है, हीरावती उसे मारकर भाग जाती है। इस प्रकार 'पाथे', 'पुष्पहार', 'पति हुई गोत' आदि कहानियों में बाल विवाह के उदाहरण मिलते हैं। समाज से दहेज की समस्या को दूर करने के लिए शिवानी अपनी रचनाओं के माध्यम से युवा शक्ति का आह्वान करने के लिए दृढ़ संकल्पित दिखाई देती हैं। कहानी 'चांचरी' में, श्रीनाथ अपने माता–पिता की इच्छा के विरुद्ध एक बूढ़े गरीब ब्राह्मण की बेटी से शादी करता है, वह भी बिना दहेज के। क्या आप ऐसे बचते थे? कहाँ तुम राजा भोज और कहाँ मैं गंगू तेली! कुश कन्या के सिवा मेरे पास क्या है?

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

इस तरह शिवानी ने 'श्राप', 'पूतोंवाली', 'रथ्या' जैसी कहानियों में दहेज समस्या का चित्रण किया है और इसे समाज के लिए घातक बताया है। शिवानी ने वैवाहिक जीवन के अहम सामाजिक बंधन के बारे में भी लिखा है। शिवानी ने अपनी कहानियों में स्त्री–पुरूष के संबंध, ब्रेकअप, घुटन, अलगाव और तलाक आदि का वर्णन किया है। कहानी 'चांचरी' में श्रीनाथ का परिवार जानबूझकर दोनों के बीच दरार पैदा करता है। नतीजा यह हुआ कि शादीशुदा होते हुए भी दोनों को अलग–अलग रहना पड़ रहा है। कहानी 'बदला' में रत्ना और ब्रजकुमार की जबरन शादी करा दी जाती है। क्योंकि रत्ना के पिता नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी प्यार के लिए किसी से शादी करे. दोनों की शादीशुदा जिंदगी नहीं चलती। रत्ना ने ब्रजकुमार को मार डाला। लघु उपन्यास 'गंडा' में, राज अपने पति के बदसूरत रूप के कारण निराश जीवन जी रही है। इसलिए वह अपनी सहेली सुपर्णा के पति को एक जाल में फंसाकर अपनी और अपनी शादीशुदा जिंदगी दोनों को बर्बाद कर लेती है। इसी तरह 'विवर्त', 'कैंजा' आदि अनेक प्रसंगों और कहानियों के माध्यम से शिवानी ने समकालीन सामाजिक विषमताओं में टूटते–बिखरे वैवाहिक जीवन का चित्रण किया है।

अवैध मातृत्व की समस्या भी तत्कालीन सामाजिक परिवेश की एक बड़ी समस्या है। विभिन्न कारणों से कुंवारेपन में मां बनना उक्त समस्या के अंतर्गत आता है। लघु उपन्यास 'किशनौली का धांत' में अर्धविक्षिप्त किशनौली को अपनी हवस का शिकार बनाकर शास्त्री जी भाग जाते हैं, पर अंत में पछताते हुए एक पत्र लिखते हैं – ''मैं तो उनके चरणों में सिर रखकर कहना चाहता था, परन्तु गर्ग गोत्री यह नीच ब्राह्मण ब्रह्मतेज बहुत पहले छूट गया है। कैसे कहूं न जाने कितनी बार स्टेशन जा कर लौटा हूं, उससे कहना कि किशनी की डांट डांट नहीं, तेरी काखी का यह बदतमीज पति उसका बाप है।

कथा साहित्य में सामाजिक चेतना एवं संस्कृति

शिवानी के उपन्यासों में अनेक अवसरों पर कुमाऊँनी पर्वतीय व्यवस्था एवं आधुनिक रीति–रिवाजों से संपन्न विवाह कार्यक्रमों की झलक मिलती है। कैनजा के लघु उपन्यास में नंदी और सुरेश के विवाह का एक उदाहरण है– "इस शुभ कार्य को तुरंत पूरा होने दो, क्योंकि रोहित शायद कल सुबह ही लौट आएगा। उसे सगाई करने और दोबारा शादी करने में दो घंटे भी नहीं लगे। सौभाग्य से ताई का उस दिन भी व्रत था, निर्जलित होकर उन्होंने कन्यादान किया और नवविवाहितों को अपनी एकमात्र मोहनमाला पहनाई। ऐसी अजीबोगरीब शादी उस गांव में पहले कभी नहीं हुई थी, शायद दुनिया में भी नहीं। नौशा उत्तेजना से थककर बार–बार थक कर बिस्तर पर लेट जाती थी। दुल्हन कई बार विवाह की वेदी से उठी और अपनी नाड़ी की जाँच की। सप्तपदी के मध्य में पवित्र अग्नि की ज्वाला में सीरिंज को उबाला गया और जब परिक्रमा का समय आया तो वरहीन वधु ने पीला वस्त्र अपनी गोद में बांध लिया और अकेले ही पवित्र अग्नि की परिक्रमा की। बिस्तर पर लेटे सुरेश भट्ट बीच–बीच में आंखें खोलते और फिर बंद कर लेते। विवाह संपन्न होते ही मेहमान डर के मारे अपने आप चले गए, इसलिए नंदी सुरेश भट्ट के सिरहाने बैठ गए।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

'चौदहा फेरे' उपन्यास में बसंती की विवाह–पूर्व तैयारियों का दृश्य – ''आभूषण और दामी साड़ी उपहार में देकर ताई का अहल्या के प्रति अनुराग बढ़ गया। 'बेटी, लाल कपड़े पर रूई से स्वागतम तो लिख दो, ऐसे सजावटी चित्र बनाने के लिए तुमने बंगाल में बहुत कुछ सीखा होगा। केवल रज्जू ही सारे काम में व्यस्त है, और लड़कों के पास मृत लड़कियों को देखने का समय नहीं है।

"घर का अंतिम छोर विवाह के हर्षोल्लास के माहौल से सराबोर था। बाहर, पत्थर के आँगन के ऊपर, एक रंगीन छतरी लटकी हुई थी। बच्चों का एक समूह नीचे फैले भारी कालीनों पर कलाबाजी कर रहा था। दूल्हे के स्नान के साथ अभिषेक किया गया, हल्दी से अग्रभाग पूरा किया गया। तीनों भाभियां लाल रोली के स्वास्तिक के बने थाल पर दोनों घुटनों में मुंह छिपाकर पीतल के बड़े से थाल में हल्दी डाल रही थीं। हल्दी के पीलेपन से रंगे बसन्ती का पीला चेहरा और भी पीला पड़ गया था। इस प्रकार शिवानी के उपन्यास में विवाह संस्कारों के अनेक उदाहरण मिलते हैं।
"भारतीय संस्कृति में, मृत व्यक्ति को श्मशान घाट तक ले जाने का कार्य आमतौर पर पुत्रों द्वारा किया जाता है। यदि किसी व्यक्ति को पुत्र न हो तो यह कार्य पुत्री या पुत्रवधू द्वारा किया जाता है। लघु उपन्यास 'रति विलाप' में – ''पूरा दिन बयान लिखने में निकल गया। उनके जनाजे का भारी बोझ भी मेरे कमजोर कंधों पर आ पड़ा। बहू होते हुए भी बेटे का फर्ज निभाया, दीदी, मैंने ही उसके लिए आग जलाई थी।

लघु उपन्यास तीसरा बेटा में, अनाथ गंगाधर सावित्री के अंतिम संस्कार की देखभाल करता है। "गंगा जो मलमल के कुर्तों की छटा बिखेरती अपनी महक से दिग्दिगंत को भ्रमित करती फिरती थी, घुटनों तक सफेद मर्सिनिया धोती में ढकी, नंगी देह, इस माँ की अर्थी को कन्धे पर लिए आगे चल रही थी, जिसने जन्म दिया था उसका। इस प्रकार शिवानी ने अपने उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के विभिन्न संस्कारों एवं संस्कारों का उल्लेख किया है, जिनमें विधि संस्कार, तर्पण संस्कार, दत्तक पुत्र विधि संस्कार, पिंडदान, पथेय विधि संस्कार तथा अनेक रीति–रिवाजों का भी उल्लेख मिलता है। भारतीय संस्कृति में त्योहारों और त्यौहारों का विशेष महत्व है। 26 जनवरी, 15 अगस्त जैसे राष्ट्रीय पर्वों के अतिरिक्त वर्ष भर कोई न कोई पर्व मनाना भारतीय संस्कृति की विशिष्ट विशेषता है। शिवानी ने अपने कथा साहित्य में विभिन्न उत्सवों, उत्सवों, लोकगीतों को गम्भीरता से स्थान दिया है। उदाहरण के लिए रतिविलाप' में रूस में रामलीला के मंचन का भी उल्लेख है, "मुझे आज जाना है। कुछ साड़ियों को परसों अमेरिकी दूतावास भेजना है। उधर रूस में रामलीला हो रही है, सीता स्वयंवर के लिए भारी भरकम साड़ी मंगाई गई है. उसे भी परसों भेजना है।

कैनजा लघु उपन्यास में नंदी तिवारी के बारे में यह कथन है– "एक बार गाँव की रामलीला समिति ने सर्वसम्मति से उन्हें राम का अंश प्रदान किया। और फिर वे कई वर्षों तक उस भूमिका में अवतरित रहीं, वास्तव में राम बनकर। न जाने यह आकर्षण था उसके जोगिया वस्त्रों का, उसके असली लम्बे बालों का या उसकी बेसुरी मीठी बचकानी आवाज का। चौदह वर्ष के कठोर वनवास की सजा पाकर वे लक्ष्मण सहित वनवास चली जातीं, फिर दर्शकों सहित शास्त्रीजी भी आंखें पोंछने लगते।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

इस प्रकार शिवानी के उपन्यासों में पर्व–त्यौहारों से सम्बन्धित अनेक प्रसंग उपलब्ध हैं। पहाड़ी प्रथा का एक उदाहरण– लघु उपन्यास 'किशनुली' में, ''मैंने पहले भी नवजात बच्चे के होठों पर कटी हुई गर्भनाल से ताजा खून लगाने की पहाड़ी चाल सुनी थी। लड़के की गर्भनाल कचहरी जाती है, ताकि वह डिप्टी बन जाए और लड़की की चूल्हे के नीचे, ताकि वह एक कुशल गृहिणी बने। मैं पर्वत के इन दो नियमों से अनभिज्ञ नहीं था।

उपसंहार

मानव अस्तित्व को बनाए रखने के लिए समाज एक महत्वपूर्ण आधार है। मनुष्य को समाज से अलग नहीं किया जा सकता है। वह समाज में जन्म लेता है और अपना सारा जीवन समाज में ही व्यतीत करता है। मानव व्यक्तित्व का पूर्ण विकास समाज में ही होता है। अरस्तू के अनुसार– 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए अन्य लोगों से सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। इन संबंधों को सामाजिक संबंध कहा जाता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैकाइवर और पेज के अनुसार, 'समाज कार्य प्रणाली और प्रथाओं, अधिकार शक्ति और कई समूहों और पारस्परिक सहायता और मानव व्यवहार के नियंत्रण या स्वतंत्रता की श्रेणियों की एक प्रणाली है। हम इसे लगातार बदलते और जटिल प्रणाली 'समाज' कहते हैं। हैरी एम जॉनसन के अनुसार, ''समाज स्थापित पैटर्न द्वारा परस्पर जुड़े समूहों की एक एकीकृत प्रणाली है।''

उपरोक्त प्रकार से समाज को परिभाषित करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मानव जीवन में समाज का बहुत महत्व है तथा व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। शिवानी के उपन्यासों और कहानियों में व्यक्ति के जीवन में समाज की विभिन्न भूमिकाओं और संवेदनाओं को दर्शाया गया है, जिसका उल्लेख आगे की चर्चा में किया गया है। समकालीन कथा काल में लगभग सभी लेखकों ने दांपत्य संबंधों पर कलम चलाई है। स्त्री और पुरुष के विपरीत स्वभाव और स्वभाव के कारण संबंधों में टूटना, बिखरना और संघर्ष होना स्वाभाविक है। पहले पुत्र–पुत्री की इच्छा को जाने बिना ही माता–पिता सम्बन्ध स्थापित कर देते थे, फलस्वरूप वैचारिक मतभेद के कारण वैवाहिक जीवन में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी।

संदर्भः–

1. कैंजा – शिवानी – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली – पृ.9
2. तीसरा बेटा (पूतोंवाली) – शिवानी – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली – पृ.140
3. नालंदा– विशाल शब्द सागर– सं.श्री नवल जी, न्यू इम्पीरियल बुक डिपो – पृ.1388
4. मोहब्बत – शिवानी भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन– प्र.सं.1984 पृ.122
5. मोहब्बत – शिवानी – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली– पृ.135
6. किशनुली का ढाँट – शिवानी– राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
7. कैंजा – शिवानी राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली – पृष्ठ सं. 72–73
8. चौदह फेरे – शिवानी– राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली – पृ. 84
9. चौदह फेरे – शिवानी– राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली – पृष्ठ 85
10. शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज – डॉ. साताप्पा शामराव सावंत– पृ.59

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

11. रतिविलाप – शिवानी – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.33
12. तीसरा बेटा (पूतोंवाली) – शिवानी – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.153
13. रतिविलाप – शिवानी – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली –पृ.11
14. कैंजा (पूतोंवाली) – शिवानी – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृ.49
15. किशनुली (रतिविलाप) – शिवानी – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृ.46
16. कालिंदी – शिवानी – राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 20

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patentor anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/Guide Name /Educational Qualification/Designation /Address of my university /college /institution/Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright /Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

शिव किशोर राय,
डॉ. राजेश कुमार शर्मा,
डॉ. शिवानी शर्मा

******